INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 11 | DECEMBER – 2024

मृदुला गर्ग की कलम में स्त्री वेदना का अध्ययन

रीनो सिंह
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. एस.एल. मिश्रा
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
शासकीय शहीद केदारनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मऊगंज (म.प्र.)

सारांश –

मृदुला गर्ग भारतीय लेखिका, जो मुख्य रूप से हिंदी साहित्य में अपनी महत्वपूर्ण रचनाओं के लिए जानी जाती हैं। मृदुला गर्ग ने अपने लेखन में स्त्री जीवन, संघर्ष और उसके अस्तित्व की गहरी छानबीन की है। उनकी कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका और उनकी आंतरिक वेदनाओं को उजागर करती हैं। मृदुला गर्ग के लेखन में स्त्री वेदना की पहचान न केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक और भावनात्मक पीड़ा के रूप में की जाती है। वे अपनी रचनाओं में स्त्री के अंदर की छिपी हुई संघर्षों और उसकी भावनात्मक स्थिति को बखूबी चित्रित करती हैं। उनके लेखन में स्त्री के आत्मसंघर्ष, समाज के प्रति असंतोष और निजी रिश्तों की समस्याओं को प्राथमिकता दी जाती है। मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री का जीवन केवल बाहरी संघर्ष तक सीमित नहीं होता। उनका लेखन महिलाओं की आंतरिक स्थिति को उद्घाटित करता है।

मुख्य शब्द – मृदुला गर्ग, हिंदी साहित्य, स्त्री जीवन, संघर्ष एवं अस्तित्व।

प्रस्तावना –

मृदुला गर्ग हिंदी साहित्य की एक प्रमुख लेखिका हैं, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज में स्त्री की स्थिति, उसकी वेदना, संघर्ष और आत्मनिर्णय की दिशा को उजागर किया है। उनकी रचनाओं में स्त्री जीवन की गहरी छानबीन और समाज द्वारा स्त्री पर लगाए गए विभिन्न प्रतिबंधों का चित्रण मिलता है। मृदुला गर्ग का लेखन केवल स्त्री की पीड़ा और वेदना को व्यक्त नहीं करता, बल्कि समाज में महिलाओं की स्वतंत्रता और समानता के मुद्दो पर भी प्रकाश डालता है। उनकी कहानियाँ और उपन्यास स्त्री के भीतर की जटिलताओं, भावनाओं और उसकी मानसिक स्थिति का गहराई से विश्लेषण करते हैं। वे स्त्री के संघर्षों को केवल बाहरी या शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप में भी प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार, मृदुला गर्ग की कलम में स्त्री वेदना केवल दुःख या पीड़ा नहीं है, बल्कि यह एक आंतरिक प्रक्रिया है जो स्त्री को अपनी स्वतंत्रता और पहचान के प्रति जागरूक करती है। इस अध्ययन का उद्देश्य मृदुला गर्ग की रचनाओं के माध्यम से स्त्री वेदना की विभिन्न परतों और उसकी आंतरिक संघर्षों को समझना है। उनके लेखन में स्त्री के भीतर के असंतोष,

आशाएँ, दुःख और व्यक्तिगत मुक्ति की खोज का स्वर प्रमुख रूप से विद्यमान है, जो भारतीय समाज की संरचनाओं और परंपराओं के खिलाफ एक महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा करता है।

मनुष्य की आत्म रचित दुनिया के भौतिक पक्ष में जितना तीव्र परिवर्तन घटित हुआ उतना तीव्र परिवर्तन उसके मानसिक नैतिक और सामाजिक पक्ष में घटित नहीं हो सकता बल्कि इस परिवर्तन के क्रम में उसका मानस का नैतिक संकल्प विवेक शून्य नहीं किन्तु मुक्त आवश्य ही हो गया है। जिस तेजी से ज्ञान–विज्ञान का विकास हुआ उस तेजी से विवेक और नैतिकता का विकास संभव नहीं हुआ। लौह युग के विवेक के साथ ही यदि साइबर युग के मनुष्य को भी जीना पड़े तो क्या कहा जाये? सशक्तीकरण की प्रक्रिया में काल संकोचन और काल संप्रसारण में सिर्फ साहित्य ही सक्षम होता है। इस प्रकार सिद्ध होता है कि साहित्य काल से होड़ लेता है। साहित्य का लक्ष्य सिर्फ मनोरंजन ही नही होता है। आज के समय की मांग है, स्त्री वेदना को पूर्णरूपेण परिभाषित करना जिसमें साहित्य अपनी प्रमुख भूमिका में है, समय एवं साहित्य का पुर्नख्यान जिस तेजी से आज किया जा रहा है, वह समूचे हिन्दी जगत का मान बढ़ाने में सक्षम है। उदाहरण के तौर पर स्त्री व्यक्तित्व का निर्धारण उसकी शारीरिक क्षमता और प्रजनन से किया जाता रहा है। वैसे भी मातृत्व शास्त्री अनुसंधानों से यह स्पष्ट हो चुका है की लिंगभेद यौनिकता और यौन भूमिका एक जैसी नहीं हो सकती है। इतना ही नहीं अलग–अलग संस्कृति में जैविक यौन भेद और सामाजिक भूमिका के बीच संबंध में भिन्नता होती है यू तो व्यक्ति का मौन भेद उसकी जैविक संरचना निर्धारित करती है पर व्यक्ति का लिंग भेद संस्कृति और समाज निर्मित करते हैं। स्त्री चाहे किसी भी रंग, जातिवर्ण या राष्ट्र की क्यों न हो पुरुष सत्तात्मक समाज स्त्री के प्रति भेद भावपूर्ण व्यवहार रखता है।

समस्याएं सदैव से एक सी ही रही हैं, हां समय–समय पर इनमें बदलाव होते गये और जीवन की कुछ नकारात्मक वस्तुओं को चुनकर नारी जाति ने भी आधुनिकता की हदों को पार किया जिसके कारण समूचा समाज एक द्विलिंगी भेद का शिकार हुआ है। मृदुला गर्ग ने कभी यह नहीं माना कि स्त्री कमजोर है, या फिर जिस काम को पुरुष कर सकता है, उसे स्त्री नहीं कर सकती है। 'वसु का कुटुम' में इसकी पुष्टि भी की है–''रत्नाबाई कहती है, तेरे बाप के साथ सोने जाना है, चौककर चपरासी एक कदम पीछे हट गया। इतने में ही रत्नाबाई अन्दर घुस गई, मुझे छूना मत। आगे बढ़ा तो देखना रत्नाबाई का चिल्लाना सुनकर चपरासी का खून जम गया, उसके लिए फौरन आगे बढ़ना नामुमकिन था, शायद उसे भी, सफदरगंज अस्पताल के नौजवान डॉक्टर की तरह बचपन में भुगता हॉरर याद आ गया था।''[1]

नारी–विम"l के मूल मे नारी–अस्मिता की खोज अलग–अलग परिस्थितियों मे अलग–अलग ढंग से अलग–अलग रूपों मे करती है। एक घरेलू स्त्री जो पुरुष पर आर्थिक रूप से निर्भर है उसकी समस्याएं अलग होती हैं और काम काजी f"kक्षित महिलाओं की अलग, उसी प्रकार इन विभिन्न नारियों की नारी–चेतना का स्तर और स्वरूप भी अलग–अलग हो जाता है।

विश्लेषण –

साहित्य की कतिपय प्रवृतियों को लेकर कुछ अन्य विद्यार्थी भी सक्रिय और गतिशील है। कविपथ प्रवृत्तियों को लेकर कुछ अन्य विद्याएँ भी सक्रिय और गतिशील हैं। कविपथ प्रवृत्तियों को लेकर कुछ अन्य विधाएँ भी कही जा सकती है। परंतु सांस्कृतिक दृष्टिकोण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि उनकी सक्रियता में वह धैर्य, गतिशीलता में वह स्थैर्य नहीं है, जो साहित्य के स्वत्व और सत्य का मिश्रण बन सकें। बनते–बिगड़ते दबाब के कारण साहित्य अपने स्वत्व और सत्व के संज्ञान में निरंतर कमजोर पड़ता गया है। रचनाओं में आत्मीय क्षणों की कलात्मक प्रस्तुति है। जिसके कारण ही उन्होंने कहा है– ''प्रायः चरित्रों का बीज जीवन से आता है, परन्तु कहानी शुरु करते हुए मेरे मन में जो इमेज होती है अंत होने तक एकदम बदल जाती है। क्योंकि बहुत बार मैं स्वयं नहीं जानती कि लिखते समय या अनुभव का कौन–सा दरवाजा खोल कौन बाहर आ खड़ा होगा।''[2]

मृदुला गर्ग ने अपनी कलम को दृढ़ किया है, और समाज के नियमों के खिलाफ होकर नारी वेदना का अहसास किया है–''मैं और मैं'' में इसको उद्घाटित किया है, ''एक अपराध बोध कौशल का है, अपने व्यतीत को लेकर, माधवी सहानुभुति दिए बगैर कैसे रहेगी? करुणा, संवेदना और भय के मिश्रण से बने बन्धन के सामने प्रेम क्या है? गिल्ट की कीलों से बिन्धे प्राणी एक–दूसरे की तरफ हाथ नहीं बढ़ाएँगे, तो कहां जाएंगे? जैसे–जैसे

माधवी का अपराध–बोध बढ़ेगा, और जरूर बढ़ेगा वह कौशल से पश्चाताप से अभिभूत होती जाएगी और फिर एक दिन ऐसा आएगा जरूर जब माधवी अपनी कुर्सी छोड़कर उठेगी, यह वेदना उसको तोड़ेगी।''[3]

आधुनिक परिवार की महिलाएँ घर की दहलीज से बाहर निकल कर व्यापार, नौकरियों तथा उद्योगों में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। सबसे खेद की बात यह है कि हमारे भारतीय समाज में पुरूष सत्रात्मक व्यवस्था के कारण नारी को या तो देवी समझा गया अथवा उसे योग्य बनाया गया। नारी विकास की लम्बी यात्रा में सम्मान, शोषण, अधिकार विहीन तथा समानता के लिए संघर्ष करती हुई प्रकार का भेदभाव नहीं है, परंतु यह उनकी वेदना का कारण भी है, जिसको वह घर बाहर दोनों ही दुनिया में भुगतती हैं।

महादेवी वर्मा ने स्त्रीत्व के स्वत्व की मांग को उठाया उन्हीं के समान युगीन महिला लेखिकाओं ने भी पुरुष वर्चस्व वाद के प्रतिमानो को तोड़ने का प्रयास किया। महादेवी वर्मा कथन के अनुसार–''हमें न किसी से जय चाहिये न किसी से पराजय।''[4] हिंदी साहित्य मे मानवीय व्यक्तित्व को उधार कर वेदना को समेटनें का आग्रह लेखिका का मुख्य लक्ष्य रहा है। इस प्रकार मृदुला जी नारी वेदना को समाज की संगतियों–विसंगतियों को समाना प्रत्येक स्तर पर अनुभव करवाकर अभिव्यक्त करने वाली कथाकार हैं, जिनकी रचना एक नारी के जीवन का प्रत्येक पहलू झाककर आयी है।

स्त्री के प्रति हिंसक प्रहार, मारपीट, छीनाकशी और रीति रिवाज जैसे तत्वों से स्त्री–मुक्ति के द्वार खोले हैं। मृदुला जी की स्त्री समाज को लेकर जो विचार धारा रही, जो मान्यता रही उन समस्त बातों को हम विविध नारी प्रथाओं के माध्यम से निम्न प्रकार से देख सकते हैं। दुनिया में नारी को आदर्श माना जाता है। केवल गृहस्थी के काम करने से ही नारी का कर्तव्य समाप्त नही होता। उसका देश, धर्म एवं समाज के प्रति भी कुछ कर्तव्य होता है, जिसका प्रमाण वह अपनी रचनाओं के द्वारा देती हैं–''केन्द्रिय सरोकार तो वही है मैं उन लोगों में से हूँ, जो देश और विश्व की समस्याओं पर चिन्तन करने पर विवश होते हैं। लेकिन उनके बारे में जबरन उपन्यास, कहानी नहीं लिख पाती, गहराई से महसूस करने पर ही लिख पाती हूँ। जैसे श्रमिकों पर मैंने काफी लिखा है, एक नाटक है, मुझे लगता है लेखन के रचनाकाल में कई तरह के दौर आते हैं।''[5]

'उसके हिस्से की धूप' दाम्पत्येत्तर सम्बन्धों को आधार बनाकर लिखे गए मृदुलाजी के इस उपन्यास में कुल तीन पात्र हैं– मनीषा, जितेन और मधुकर। पति की व्यस्तता से पति–पत्नी के दाम्पत्य सम्बन्धों में उदासीनता निर्माण होने पर दाम्पत्येत्तर सम्बन्धों की स्थिति निर्माण होती है और परिणामतः पति–पत्नी का तलाक हो जाता है। फिर उस दूसरे पति से भी ऊब अनुभव करने वाली नायिका मनीषा द्वंद्व से घिरकर सृजनात्मकता में ही 'निजता' या 'स्व' की तलाश करती है। इस प्रकार पति जितेन और प्रेमी मधुकर दोनों से असन्तुष्ट मनीषा के जीवन की भटकन को प्रस्तुत कृति में अंकित किया गया है। यह 'स्त्री–स्वतन्त्रता का प्रचारक उपन्यास' कहा जाता है। उपन्यास नारी पुरुष के संबंधों एवं उसको लेकर होने वाली विचाराधाराओं पर आधारित है–''काश मैं भी इसी तरह हर इन्सान के लिए चिन्तित हो सकती, आज जितना उत्तेजित मधुकर क्लास क एक सामान्य छात्र के लिए हो उठा है, प्रेम पात्र की खोज में भटककर वह जितेन के रास्ते मधुकर तक पहुँची है और अब उसे अपनी जीवन–धुरी का केन्द्रबिन्दु बना बैठी है।''[6]

मृदुला गर्ग का कथेतर साहित्य भी उनके अपने व्यक्तित्व और कृतित्व के नानापक्षों और प्रसंगों को उद्घाटित करता है, अतः एक ग्रंथ के रूप में उनके कथेतर साहित्य का सम्यक रूप से अध्ययन इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया है। अनेकों प्रकार से कई ग्रंथों को लिखकर लेखिका ने साहित्य में अपना विशेष स्थान निर्माण किया है। कुछ लिखने की वजह वह सदैव ही ऐसा विषय लिखतो हैं, जो हकीकत हो। मृदुला गर्ग के कृति रूप और कृतित्व का समग्र मूल्यांकन किया गया है। कारण मृदुला जी ने अपनी बड़ी बहन तथा एक सुप्रसिद्ध हिंदी कथाकर मंजुल भगत के निधन के उपरांत उनकी स्मृति में दो संस्मरण भी लिखे हैं। प्रथम संस्मरण 'दीदी की याद में' ('साहित्य अमृत' सितम्बर 1998 में प्रकाशित) तथा दूसरा 'एक महाआख्यान लघु उपन्यास सा निबट गया' ('हंस' सितम्बर 1996 में प्रकाशित) ये दोनों उत्कृष्ट संस्मरणों के रूप में देखे जा सकते हैं। इन संस्मरणों में मंजुल भगत से जुड़ी अनेक जीवन स्मृतियों, उनका आकर्षक व्यक्तित्व, उनकी आदतों, आर्थिक अभावों से भरा उनका जीवन, मंजुल जी की नृत्यप्रेम, लेखिका रूप, पति की खातिर उनकी भव्यता का अपव्यय, लाइब्रेरियन की नौकरी, फिर बीमारी से ग्रस्त होकर इलाज के अभाव में मृत्यु को प्राप्त होना इत्यादि यादों का मार्मिक अंकन करके मृदुला जी ने अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि के रूप में ये दो संस्मरण मंजुल जी के लिए लिखे हैं।

मृदुला गर्ग ने साठोत्तरी नारी की उभरती हुई मानसिक तनाव और उसके अहं का चित्रण सूक्ष्मता से किया है। हिन्दी उपन्यास–जगत में उन्होंने अपनी अलग पहचान बनायी है। उनके उपन्यास व्यक्ति विशेष को महत्त्व रखने वाले हैं। उसके साथ ही संस्मरण एवं रेखाचित्र का आनंद भी देने वाले हैं। जीवन के विविध संगतियों का उद्घाटन अपने कृतित्वों में किया गया है।

मृदुला गर्ग ने अपने सम्पूर्ण साहित्य में समाज में रहने वाली वेश्यावृत्ति, गरीबी, कुण्ठाग्रस्त जीवन का खुले आम चित्रण किया है। उनकी कहानी भी इसी तरह के विषयों का उदाहरण है। इनमें से सबसे अधिक त्रासदायक है अकेले शहर में अकेले रहने वाली लड़कियों में वेश्यावृत्ति की बढ़ती हुई प्रवृत्ति। गरीबी की हाहाकार, तन की कमाई, धन का लालच आदि भांति–भांति के जीवन बिताने वाले परिवारों को प्रमुखता देकर लेखिका ने लिखा है। उनकी रचनाओं में आवारा गर्दी, अंधाधुंध फैशन, कमाना, कम दिखावा, ज्यादा है महत्वाकांक्षाओं का गुबार भी अधिक है–''रात को अपने शयनकक्ष में मुलायम गद्दे पर आराम से लेटे–लेटे वह सोचती, कितना आसान तो है, मधुकर मुझे प्यार करता है और मैं उसे इस तरह छिप–छिपकर मिलकर अपनी आत्मा का हनन करने से कहीं अच्छा है, जितेन से तलाक माँग लेना और जीवन का पुनारम्भ करना, मधुकर के साथ, एक दूसरा घर, एक दूसरा शहर, एक दूसरी दिनचर्या, एक दूसरा जीवन।''[7]

अतः मृदुला गर्ग की भी विशिष्ट मान्यताओं, विचारों से हम लेखकों के साथ समय–समय पर लिए गए उनके साक्षात्कारों से ही वाकिफ हो सकते हैं 'मेरे साक्षात्कार' नामक पुस्तक जो विज्ञान भूषण द्वारा संपादित की गई है तथा जो 2012 में किताब घर प्रकाशन से छपी है, उपरोक्त दृष्टि से महत्वपूर्ण किताब है जिसमें मृदुला गर्ग द्वारा दिए गए बीस के करीब साक्षात्कारों का संकलन है। प्रस्तुत है उनकी मान्यताएँ।

चितकोबरा विवादास्पद किन्तु बेहद लोकप्रिय उपन्यास है जिसका जर्मन भाषा में भी अनुवाद हो चुका है। यह लेखिका का एक प्रतीकात्मक उपन्यास है जिसे लेखिका ने 'हमसफर' को समर्पित किया है। लोकप्रिय कथा लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास में नारी–पुरुष के संवेदनशील सम्बन्धों को व्याख्यायित और रूपायित करने का प्रयास किया है–''एक खास बात यह है कि तुम कपड़े उतारकर भी वैसी ही लगती हो जैसी कपड़े पहनकर, क्या मतलब? ज्यादातर औरतें कपड़े उतारते ही दिलचस्प नहीं रहतीं, तुम रहती हो, तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे बिना कपड़े बीसियो औरतों को देखा हो? तुम क्या नंगी औरतें देखते फिरते हो? मैंने कहा, यह क्या बोलने का तरीका हुआ! गुस्से में भी आदमी को अपनी शालीनता नहीं खोनी चाहिए। मैं औरत हूँ, तुम पुरुष हो इसलिए, बात को घुमाओ मत जो मैं पूछ रही हूँ, उसका जवाब दो, तुम सारी दुनिया में नंगी औरतें देखते फिरते हो?''[8]

प्रेम, विवाह और सेक्स के कथ्य को लेकर उपन्यास की रचना हुई है। दाम्पत्य सम्बन्ध तथा दाम्पत्येतर सम्बन्धों को लेकर नायिका मनु का भावनात्मक द्वन्द्व उपन्यास में मुखर हुआ है जिसकी परिणति साहित्य सृजन में होती है। अपने इस उपन्यास में मृदुला गर्ग ने सेक्स का खुला और बेबाक वर्णन करके अपनी जिस साहसिकता का परिचय दिया है उसके कारण वे आलोचकों की प्रशंसा और निन्दा दोनों की पात्र हुई है, मनु, महेश और रिचर्ड के त्रिकोणात्मक प्रेम–सम्बन्धों की यह कथा है। यह 'उसके हिस्से की धूप' की अगली कड़ी है। नैतिकता, अनैतिकता के प्रश्नों को तिलांजलि देकर स्वच्छन्द स्त्री–पुरुष सम्बन्धों का प्रतिपादन करने के कारण विवेच्य उपन्यास विवादों के घेरे में रहा है। स्त्री जीवन की विसंगतियों को एवं होने वाले उन कुप्रभावों का समावेश इस उपन्यास में मिलता है, जिसकी कल्पना भी करना बहुत ही घातक हो जाता है। शारिरिक संबंधों के लिए दुनिया की सारी हदों को पार कर देना आज के समाज में आम बात है, जिसका चित्रण नारी पात्रों के द्वारा इस उपन्यास में मृदुला को करना पड़ा है–''देखो, बात मानों मोड़ पर कदम बढ़ा लो, मेरे साथ चले तो अस्तित्व मिट जाएगा, मुझे तुम दिख तक नहीं रहे। कैसे दिखोगे? मेरे लिए न वर्तमान है न भविष्य! मेरे व्यतीत में तुम थे नहीं। मैं आज नहीं कल जिन्दा थी, मेरा कल आज भी जिन्दा है, वह नहीं तब भी।''[9]

मृदुला गर्ग के 'चितकोबरा' को लेकर मचे बवाल के बारे में मृदुला जी कहती है, ''इस उपन्यास पर शोरगुल मचने की दो प्रमुख वजह थी, (1) दोनों पात्रों के मन में किसी तरह का अपराध बोध नहीं हैं। शादीशुदा होने पर भी स्त्री के मन में पछतावा नहीं है (2) उपन्यास बहुत ईमानदारी के साथ लिखा गया है। स्त्री पात्र संभोग के दौरान अनुभव की गई उन भावनाओं पर खुलकर बोलती या सोचती है जिन्हें उसका शरीर और मन अलग–अलग धरातल पर महसूस करते हैं, अतः पति–पत्नी के बीच संभोग के दृश्य को उसके चरमसुख को चित्रित करने के कारण मृदुला जी का यह उपन्यास विवादास्पद रहा। उनका यह विचार भारतीय समाज की

पारंपारिक सोच से अलग था, इसका परिणाम यह हुआ कि मृदुला जी को गिरफ्तार भी किया गया इसके प्रत्युत्तर में मृदुला जी कहती हैं कि – हिंदी साहित्य के लेखक आपस में भाई–भाभी, दीदी–जेठ वगैरे होते हैं, मैं लेखकों के बीच इन रिश्तों को मान्यता नहीं दे पाई। चितकोबरा मेरी सातवीं पुस्तक थीं। लोगों को लगा, अचानक छोटे बच्चों की माँ एक युवा स्त्री सामने आ रही है, जो कोई संरक्षक नहीं चाहती।'' मेरी समझ में यह भी नहीं आया कि युवा लेखक के अपने विचारों को खुलकर व्यक्त करने में गलत क्या है? कि उम्रदराज लेखक मठाधीश या गुरु की तरह क्यों होते हैं? शायद इसीलिए मुझे पाठ पढ़ाने के विचार से तमाम हंगामा हुआ।''[10]

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मृदुला गर्ग के लेखन में स्त्री वेदना को एक गहरे और विचारशील दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। उनके साहित्य ने न केवल स्त्री के संघर्षों को उजागर किया, बल्कि उसकी स्वतंत्रता, आत्मनिर्णय और व्यक्तिगत पहचान के महत्व को भी रेखांकित किया। उनके लेखन में यह स्पष्ट होता है कि स्त्री की वेदना केवल शारीरिक या बाहरी स्तर पर नहीं होती, बल्कि यह मानसिक और आंतरिक दुनिया में भी गहरे रूप से मौजूद रहती है, जो उसे अपनी स्वतंत्रता की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। मृदुला गर्ग की रचनाएँ स्त्री की स्थिति को एक व्यापक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं, जहां समाज और परिवार की स्थापित नीतियों और परंपराओं के बीच स्त्री को अपनी स्वतंत्रता की तलाश होती है। उनके लेखन में स्त्री को मात्र एक दया की पात्र या कर्तव्यनिष्ठा के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रौढ़ और जागरूक इंसान के रूप में दिखाया गया है, जो अपनो पहचान और अस्मिता के लिए संघर्ष करती है। मृदुला गर्ग के लेखन में स्त्री वेदना केवल दुःख या पीड़ा का अनुभव नहीं है, बल्कि यह एक चेतना की प्रक्रिया है, जो उसे अपनी स्वतंत्रता, इच्छाओं और अपनी पहचान की खोज में प्रेरित करती है। उनके पात्र जीवन के उन पहलुओं को व्यक्त करते हैं जो अक्सर समाज की मुख्यधारा से बाहर होते हैं। वे स्त्री के भीतर की घुटन, संघर्ष और उसका आत्मनिर्णय की दिशा में कदम बढ़ाने की प्रक्रिया को सुंदरता से चित्रित करती हैं।

संदर्भ –

[1] मृदुला गर्ग – वसु का कुटुम, पृष्ठ 61
[2] शख्सियत कार्यक्रम के दौरान पूछे गये सवाल पर, अशोक श्रीवास्तव की बातचीत के दौरान
[3] मृदुला गर्ग – मैं और मैं, पृष्ठ 68
[4] विमलेश क्रांति शर्मा – भाषा, साहित्य और संस्कृति, पृष्ठ 407
[5] विज्ञान भूषण द्वारा न्यूयॉर्क ह्यूमन राइट्स वॉच द्वारा लिये गये साक्षात्कार से
[6] मृदुला गर्ग – उसके हिस्से की धूप, पृष्ठ 109
[7] मृदुला गर्ग – उसके हिस्से की धूप, पृष्ठ 88
[8] मृदुला गर्ग – चितकोबरा, पृष्ठ 124
[9] मृदुला गर्ग – चितकोबरा, पृष्ठ 154
[10] दूरदर्शन पर पूछे गये सवाल पर–एक साक्षात्कार के दौरान